ISSN 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 9 | October - 2016

Indian Streams Research Journal

पहाड़ी कोरवा जनजाति में संचार व्यवस्था : एक अध्ययन
(A Study on Communicational aspect among the Hill Korwa Tribe)

अमित कुमार चौहान[1] , डॉ. राजेन्द्र मोहंती[2]

[1]एम.फिल., शोधार्थी, मीडिया स्टडीज, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

शोध सारांश (Abstract) :

भारत में लगभग 212 जनजातियां हैं। जिन्हें आदिमजाति, जनजाति, आदिवासी, वन्यजाति आदि नामों से जाना जाता है। संविधान में इन्हें अनुसूचित जनजाति कहा गया है। शोधार्थी द्वारा इस विषय में शोध करने का मुख्य उद्देश्य शोध समस्या की नवीनता व वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता है। शीर्षक अपनी उपादेयता को स्पष्ट रुप से परिलक्षित कर रहा है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में संचार व्यवस्था किस प्रकार से व्यवहार के साथ- साथ दैनिक जीवन के विभिन्न रुपों से आगे बढ़कर, समाज, समुदाय के अलावा आने वाली पीढ़ी में संचार व्यवस्था के रुप में शामिल है, यह इस अध्ययन से पता चलता है। छत्तीसगढ़ के मुख्य जिलों में निवासरत पहाड़ी कोरवा जनजाति में किस प्रकार की संचार व्यवस्था है? वे किन- किन चीजों का प्रयोग करते हैं? संचार किस तरह उनकी मान्यता, परंपरा, त्यौहार, प्रतीक, चिन्ह, पूजा-पाठ, भाषा, पहनावा, रहन- सहन, लोकगीत आदि में रचा-बसा है तथा पारंपरि व नवीन संचार किस प्रकार का आयाम गढ़ रही है, इन तमाम बातों का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द (Key Word) : संचार, पहाड़ी कोरवा एवं जनजाति।

प्रस्तावना (Introduction) :

जनजातीय समाज प्राचीन काल से अब तक भारतीय समाज का अभिन्न अंग रहा है। डॉ मजूमदार के अनुसार "जनजाति परिवारों या परिवारों के समूह का एक संकलन होता है, जिनका एक सामान्य नाम होता है। जिनके सदस्य एक निश्चित भू-भाग पर रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं और विवाह, व्यवसाय, उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं। एक निश्चित एवं उपयोगी परस्पर आदान-प्रदान की व्यवस्था का विकास करते हैं।' भारत में पहाड़ी कोरवा अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत आती है। इन्हें राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र के रुप में भी जाना जाता है। ये मुख्यतः पहाड़ों और जंगलों में रहने वाली आदिवासी जनजाति है। ये पिछड़ी एवं लुप्तप्राय जनजाति है। मुख्यतः ये छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तरप्रदेश के मिर्जापूर जिले तथा छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे छोटा नागपूर के जंगलों में निवास कर रही हैं। शिकार करना, खेती करना, पेड़ों से लकड़ी काटना इनका मुख्य कार्य है। पहाड़ी कोरवा ठिगने कद और काले रंग के होते हैं। इन्हें

निंगा और कोलारियस प्रजाति का माना जाता है।पहाड़ों में रहने वाली यह जनजाति समय के साथ मैदानी इलाकों में भी आकर रहने लगी है जिन्हें मैदानी या देहाती कोरवा कहा जाता है

संचार (Communication) :

यह लैटिन भाषा की संज्ञा 'Communis' और लैटिन भाषा की क्रिया 'Communicare' शब्द से बना है, इसका अर्थ है 'सामान्य भागीदारी युक्त एवं उसका संप्रेषण संचार एक तकनीकी शब्द है। हम अपनी भावनाओं और अभिव्यक्ति को किसी उद्देश्य विशेष के लिए साझा करते हैं। मानव जीवन के लिए वायु भोजन, जल की जिस प्रकार आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार मानव समाज के लिए संप्रेषण की आवश्यक्ता है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में 42 जनजातियां तथा 43 अनुसूचित जातियां निवास करती हैं प्रदेश में देश के 5 विशेष पिछड़ी जनजाति (Primitive Tribal Group PTG) क्रमशः कमार, बिरहोर, अबुझमाड़िया, बैगा तथा पहाड़ी कोरवा निवास करती है। ये अत्यल्प संख्यक जनजाति है। कोरवा जनजाति की एक उपजाति 'कोरकू' है और जिस तरह सतपुड़ा की दूसरी कोरकू जनजाति मुसाई भी कहलाती है, उसी तरह कोरकू भी 'मुसाई' नाम से पहचाने जाते हैं। जिनका शाब्दिक अर्थ है 'चोर' या 'डकैत'। कूक 'कोरबा' और 'कूक' को एक ही जनजाति के दो उपभेद मानते हैं। जबकि 'ग्रियर्सन' भाषा के आधार पर उनकी भाषा को असुरों के अधिक निकट पाते हैं। कोस्ता लोगों में 'मांझी' सम्मान सूचक पदवी मानी जाती है। इनकी अपनी पंचायत होती है जिसे "मैयारी" कहते हैं। सारे गांव के कोरवाओं के बीच एक प्रधान होता है, जिसे "मुखिया" कहते हैं। बड़े- बूढ़े तथा समझदार लोग पंचायत के सदस्य होते हैं। पंचायत का फैसला सर्वमान्य होता है। पहाड़ी कोरवा समाज में यदि कोई व्यक्ति गलत काम करता है तो गुड़ी में बड़े लोगों के द्वारा समझाया जाता है कि वो गलत काम छोड़ दे किन्तु फिर भी अगर वो नहीं मानता या कोई बड़ी गलती होने पर समाज उसे दंडित भी करता है। दंड स्वरुप उसे पैसा, बकरा, खाना-पीना करवाना पड़ता है। शादी विवाह में अगर कोई गलती हो जाए तो तुरंत डाड़ (जुर्माना) लेते हैं। डाड़ केवल लड़के वालों से ही लिया जाता है। लड़की पक्ष से डाड़ नहीं लिया जाता है। इनकी भाषा संथाली और मुंडरी से मिलती है। मुंडरी के अलावा ये छत्तीसगढ़ी भी बोलते हैं।पहाड़ी कोरवा दो त्यौहारों को धूम-धाम के साथ मनाते हैं, क्रमशः भाजी तिहार एवं नावा तिहार। देवी-देवता में खेड़हाभाजी को अर्पित किया जाता है। ये खेड़हा भाजी को आषाढ़-सावन में नहीं खाते। अपने पूर्वजों के देवधामी को पूजा जाता है। नया धान होने की खुशी मेंनावा त्यौहार मनाया जाता है तथा नए धान को देवता को अर्पित किया जाता है। फिर प्रसाद स्वरुप पूरा परिवार उसे खाते हैं। इस समय गीत गाया जाता है तथा कथा के माध्यम से उसके महत्व का बखान किया जाता है। नावा तिहार के अवसर पर गुरु तथा सगा समाज के लोगों का आदर-सत्कार भी किया जाता है। रविवार को उपवास रख अपने गुरु को प्रसन्न किया जाता है। शाम को 4 बजे स्नान करने के बाद रोटी बनाया जाता है। शाम को ही पूजा-पाठ कर फरहार (उपवास तोड़ा) किया जाता है। फरहार करने के बाद गुरु चाल पढ़ा जाता है। इसमें पूर्वजों के मंत्र, देवता, फूंकने का मंत्र बिच्छू, सांप, बुखार, भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए मंत्र तथा जड़ी-बूटियों की जानकारी के बारे में सिखाया जाता है।ये सब गुरु या गांव के प्रमुख बैगा द्वारा सिखाया जाता है।पहाड़ी कोरवा जनजाति मुख्य रुप से पांच अंतर्जातीय गोत्र में विश्वास करती है। क्रमशः हंशद्वार, समात (प्रधान), ऐदेग्वार, गिन्नूर, रेनला मुख्य है। इसके अलावा भी कुछ और गोत्र हैं जो क्रमशः हसदा, गीनू, मुढ़ियार, सोनवानी, सोनखुमरी है। पहाड़ी कोरवा के लोग खुले बदन होते हैं तथा लंगोटी पहने होते हैं। विशेष आयोजन-पर्व के समय सफेद धोती व सर पर पागा (साफा) बांधते हैं। सफेद धोती को ये धार्मिक रुप से अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं, इनका मानना है कि सफेद धोती में देवता का वास होता है। विशेष अवसर पर महिलाएं लूगरा पहनती हैं तथा सामान्य समय में एक ही कपड़े को लपेटकर पहनती हैं। महिलाओं में गोदना का विशेष महत्व होता है, इनका मानना है कि लोक परलोक से गोदना का संबंध जुड़ा होता है। स्त्रियां अपने शरीर के विभिन्न अंगों में गोदना गुदवाती हैं। उनके अनुसार गोदना उनके सौन्दर्य को बढ़ाता है। ऐसी मान्यता है कि गोदना न गुदवाने पर मृत्यु के पश्चात स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती है उनकी मान्यता है कि मरने के बाद सब कुछ धरती पर ही रह जाता है, केवल गोदना ही साथ जाता है। घोघिया-घोघियारिन (देवार-देवारिन) से गोदना गुदवाया जाता है। गोदना पैर, ऐड़ी, भुजा, हथेली तथा घुटने इत्यादि अंगों में गुदवाया जाता है।पहाड़ी कोरवा सघन वन व पहाड़ में निवास करते हैं। इनके पास कई प्रकार के साधनों का अभाव होता है। ये कहीं आने-जाने के लिए पैदल ही सफर करते हैं। यात्रा के समय बच्चों को कंधे पर या टोकरी, कांवर पर ले जाते हैं। इसके अलावा येबच्चों को कमर में बैठाकर या चुगी लटकाकर भी ले जाते हैं। येकिसी

संदेश को भेजने के लिए स्वयं पैदल जाते हैं। संचार साधन न होने के कारण मौखिक ही संदेश देते हैं। ये केवल अपने समाज के संदेशों एवं गतिविधियों से ही संबंध रखते हैं इन्हें देश-विदेश के संदेशों एवं समाचारों से कोई सरोकार नहीं होता है।

अन्य विभिन्न मान्यताएं एवं संचार से जुड़ी बाते:

- शिकारप्रियता के साथ शिकार से संबंधित उनके अंधविश्वास और टोनेटोटके भी हैं, जैसे- शिकार या यात्रा में जाने के समय बच्चे के रोने को अशुभ माना जाता है।
- व्यक्ति के मृत्युपरांत उसकी झोपड़ी तोड़ दी जाती है। उसमें कोई निवास नहीं करता।
- मृत बच्चे को बट वृक्ष के नीचे गाड़ दिया जाता है।
- इनके बारे में एक रोचक तथ्य यह भी है कि ये स्वयं को महाभारत के कौरवों का वंशज मानते हैं
- वधु की तलाश में वर पक्ष वधु पक्ष के घर जाता है, इस दौरान अगर सियार की आवाज़ सुनाई देती है, तो शादी का रिश्ता तय नहीं करते हैं।
- कोटरी (हिरण), तेंदुआ, शेर की आवाज को बहुत शुभ मानते हैं एवं कौवा, सियार की आवाज को अशुभ मानते हैं।
- पहाड़ी कोरवा महिलाएं केवल अपने ही हाथ का भोजन करती हैं, किसी दूसरे के हाथ का भोजन नहीं करतीं हैं। दूसरों के हाथों का भोजन इनके लिए वर्जित होता है। ये इस नियम का पालन कढ़ाई के साथ करती हैं तथा किसी भी अवसर अन्य लोगों के यहां जाती तो हैं किन्तु वहां भोजन नहीं करती हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objective of Research Study) :

1. पहाड़ी कोरवा जनजाति के समाजशास्त्र का अध्ययन करना।
2. पहाड़ी कोरवा जनजातीय समाज के राजनैतिक व आर्थिक पक्ष का अध्ययन करना।
3. आधुनिक संचार माध्यम व नवीन जनमाध्यमों के प्रयोग तथा कला, संस्कृति, पर्व, त्यौहारों, परंपराओं, मान्यताओं का अध्ययन करना।
4. इनके प्रतीक चिन्ह, पूजा, पहनावा, भाषा, लोकोक्तियां, लोकगीत किस प्रकार से उनके दैनिक जीवन में संचार करती हैं तथा उनका क्या महत्व इसका अध्ययन करना।

उपकल्पना (Hypothesis) :

1. पहाड़ी कोरवा संचार माध्यम के रुप में आज भी समाज में परंपरागत माध्यमों का प्रयोग करते हैं।
2. पहाड़ी कोरवा को राजनीति की कम जानकारी है, जिसका कारण आधुनिक संचार साधनों की कमी है।
3. अपनी परंपरा, कला, संस्कृति, पर्व, मान्यताओं, लोकगीतों के हस्तांतरण में परंपरागत संचार माध्यमों का प्रयोग हो रहा है।
4. नई पीढ़ी में रुचि की कमी के कारण अपनी पुरानी चीजों को सीखने में कमी आ रही है।

शोध प्रविधि (Research Methodology) :

शोधार्थी द्वारा अपने शोध अध्ययन के दौरान समूह प्रतिदर्शन (Cluster Sampling), सहभागी अवलोकन पद्धति (Participant observation method) के अलावा साक्षात्कार अनुसूची उपकरण (Interview Schedule Tool) का प्रयोग कर आंकड़ों एवं तथ्यों को एकत्रित किया किया गया है। तत्पश्चात् प्राप्त आवश्यक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के रुप में समूह प्रतिदर्शन

पद्धति के द्वारा साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से आंकड़ें एकत्रित किए गए हैं। द्वितीयक आंकड़ों के रुप में पूर्व में किए गए शोध प्रबंध, शोध आलेख, रिसर्च रिपोर्ट, इंटरनेट एवं ग्रंथालय में उपलब्ध किताबों का उपयोग किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन (Literature Review) :

देश में जो प्रमुख्यतः जनजातीय अध्ययन हुए हैं उनमें सुन्दरम (1943) ने नीलगिरी पर्वत के "टोडा" जनजाति पर अध्ययन किया है। श्रीवास्तव (1964) ने मेवाड़ के "भील" जनजाति, सिंग (1943) ने "थारु" जनजाति की मानव परिस्थिति एवं ग्रेनान्बल (1959) ने ट्रावनकोर की जनजातियों का अध्ययन किया है। बोस एवं पटनायक (1953) ने "मुण्डा" जनजाति की सभ्यता के आर्थिक पहलुओं का अध्ययन किया है। जनजातियों के अध्ययन में में पाध्ये (1962), रजा (1967), बिलीमोरिया (1964) ने भई भारत के प्राचीन जनजातियों के सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन किया है। कुजुर, डॉ. निस्तारः कोरवा जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति का एक समाज शास्त्रीय अध्ययन, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)। शोध प्रबंध के अध्ययन से पता चला कि कोरवा जनजाति के सामाजिक आर्थिक स्थिति अभी भी जस की तस बनी हुई है। इनमें अपेक्षाकृत काफी कम विकास हुआ है। इस शोध प्रबंध के अध्ययन से पहाड़ी कोरवाओं की आर्थिक स्थिति को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली है। जनजातीय किसानों में संचार का प्रयोग तथा व्यवहार किस तरह से हो रहा है, यह अध्ययन से पता चला है। इसके अध्ययन ने शोधार्थी के अध्ययन को स्पष्ट मार्ग में बढ़ने में सहायता की है। शोध प्रबंधके अध्ययन से कैसे भाषा किसी के पहचान को नवीन आयाम दे रही है इसका पता चलता है।

शोध अध्ययन की सीमाएं (Limitation of Research Study) :

पहाड़ी कोरवा जनजाति के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए साहित्य, किताब एवं इंटरनेट में इनसे संबंधित विषयवस्तु की कमी है, जो कि एक प्रमुख समस्या है। पहाड़ी कोरवा जंगलों व पहाड़ों में रहते हैं अतः उन तक पहुंचना व अध्ययन करना काफी चुनौती भरा कार्य है। साथ ही उनकी भाषा को समझने तथा उनके बीच संवाद स्थापित करना भी एक जटिल कार्य है। शोध की सीमा, अर्थ, समय व साधन को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण भारत में पहाड़ी कोरवा जनजाति पर शोधकार्य करना संभव नहीं था। फलतः शोध कार्य में समूह प्रतिदर्शन पद्धति से राज्य के कुछ जिलों में जहां पहाड़ी कोरवा निवास करती है, यहां के 5 गांवों को शोध-क्षेत्र के अध्ययन के रुप में शामिल किया गया है। आंकड़े एवं जानकारी जुटाने के लिए महिलाओं व पुरुषों से साक्षात्कार भी लिया गया है। इसेक लिए 30 लोगों से साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर जानकारी इकट्ठा किया गया है। चूंकि शोध क्षेत्र के लिए छत्तीसगढ़ के उन जिलों को चुना गया है, जहां पहाड़ी कोरवा मुख्य रुप से निवास करते हैं, इसलिए शोध परिणाम संपूर्ण राज्य के पहाड़ी कोरवा जनजातियों के संदर्भ में लागू होगा।

1. इस शोध अध्ययन में केवल जांजगीर- चांपा तथा कोरबा जिले के ही पहाड़ी कोरवा जनजाति को शामिल किया गया है।
2. इस शोध अध्ययन में केवल उन्ही पहाड़ी कोरवा को शामिल किया गया है जो पहाड़ों में रहते हैं।
3. इस शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।
4. इस शोध अध्ययन में केवल संचार को केन्द्रबिन्दू के रुप में रखा गया है। विषय संदर्भ एवं उद्देश्य के रुप में संचार व्यवस्था एवं पहाड़ी कोरवा ही मुख्य हैं।

तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण (Compilation and analysis of the facts)

कोरबा एवं जांजगीर-चांपा (शोध अध्ययन क्षेत्र)

क्र.	जिले का नाम	जिला मुख्यालय	जनसंख्या (2011)	विकास दर	लिंग अनुपात	साक्षरता
1.	कोरबा	कोरबा	1206640	19.25	969	72.37%
2.	जांजगीर-चांपा	नैला जांजगीर	1619707	22.94	989	73.07%

उत्तरदाताओं का लिंग के आधारपर वर्गीकरण

उत्तरदाता	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
महिला	17	34%
पुरुष	33	66%
कुल	50	100%

शोधकर्ता द्वारा शोध में 50 लोगों का शामिल किया गया है, जिसमें 17 महिला और 33 पुरुष हैं।

सरकारी योजनाओं की जानकारी

सरकारी योजनाओं कीजानकारी	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
हां	19	38 %
नहीं	31	62 %
कुल	50	100 %

38 % उत्तरदाताओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी है तथा62 % उत्तरदाताओं को जानकारी नहीं है।

उत्तरदाताओं का संयुक्तएकल परिवार

उत्तरदाताओं का परिवार	संख्या	प्रतिशत
संयुक्त	33	66 %
एकल	17	34 %
कुल	50	100 %

66 % उत्तरदाता संयुक्त परिवार में रहते हैं तथा34 % उत्तरदाता एकल परिवार में रहते हैं।

क्या आपके यहां बिजली है?

जिला	गांव का नाम	बिजली है	बिजली नहीं है
जांजगीर-चांपा	रैनखोल	-	नहीं है
	छछानपानी	-	नहीं है
कोरबा	जगधरखोला	हां	-
	फूटहामूड़ा	हां	-
	धंवईभांठा	हां	-
कुल- 2 जिला	5 गांव	3 गांव में है	2 गांव में नहीं है

कोरबा जिले के 3 गांवों में बिजली है तथा जांजगीरचांपा के2 गांवों में बिजली नहीं है।अर्थात् 60 % के यहां बिजली है40 % के यहां बिजली नहीं है।

क्या आपके यहां टेलीविजन है?

उत्तरदाता के यहां टेलीविजन	संख्या	प्रतिशत
हां	0	0 %
नहीं	50	100 %
कुल	50	100 %

100 % उत्तरदाताओं के पास टेलीविजन नहीं है।

क्या आप रेडियो सुनते हैं?

उत्तरदाता	सुनने वालों की संख्या	प्रतिशत
हां	13	26 %
नहीं	37	74 %
कुल	50	100 %

26 % उत्तरदाता रेडियो सुनते हैं तथा 74 % उत्तरदाता रेडियो नहीं सुनते हैं।

क्या आपके पास मोबाईल है?

आपके पास मोबाईल है	मोबाईल रखने वालों की संख्या	प्रतिशत
हां	09	18 %
नहीं	41	82 %
कुल	50	100 %

18 % उत्तरदाताओं के पास मोबाईल है तथा 82 % उत्तरदाताओं के पास मोबाईल नहीं है।

क्या आप डाक या चिट्ठी- पत्री का प्रयोग करते हैं?

डाक या चिट्ठी-पत्री का प्रयोग	संख्या	प्रतिशत
हां	0	0 %
नहीं	50	100 %
कुल	50	100 %

कोई भी उत्तरदाता डाक या चिट्ठी का प्रयोग नहीं करता है।

आप मनोरंजन के लिए किन माध्यमों का प्रयोग अधिक करते हैं?

मनोरंजन के माध्यम	संख्या	प्रतिशत
टी.वी.	0	0 %
रेडियो	07	14 %
पारंपरिक माध्यम	41	82 %
अन्य	00	0 %
सभी	02	04 %
कुल	50	100 %

82 % उत्तरदाता मनोरंजन के लिए पारंपरिक माध्यमों का प्रयोग करते हैं तथा 14 % उत्तरदाता मनोरंजन के लिए रेडियो का प्रयोग करते हैं। 4 % उत्तरदाता दिए गए प्रकारों में से सभी माध्यमों का प्रयोग करते हैं टीवी तथा अन्य में कोई भी उत्तरदाता सहभागिता नहीं निभाता शत प्रतिशत प्रयोग में नहीं लाता है।

क्या आप जानकारी के लिए कोटवार, पंचायत, स्कूल या अन्य सरकारी तंत्र की सहायता लेते हैं?

जानकारी के लिए सहायता लेना	सहायता लेने वाले उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
हां	18	36 %

नहीं	32	64 %
कुल	50	100 %

36 % उत्तरदाता जानकारी के लिए कोटवार, सरपंच, स्कूल या अन्य सरकारी तंत्र की सहायता लेते हैं।जबकि 64 % उत्तरदाता जानकारी के लिए इनकी सहायता नहीं लेते हैं।

आप स्वयं को परिपक्व व जागरुक बनाने के लिए क्या करते हैं?

परिपक्व व जागरुक बनने के लिए	संख्या	प्रतिशत
गुड़ी बैठक	23	46 %
बड़ों से चर्चा-परिचर्चा	20	40 %
नवीन संचार माध्यमों का प्रयोग	03	06 %
उपरोक्त सभी	04	08 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 46 % उत्तरदाता स्वयं को जागरुक व परिपक्व बनाने के लिए गुठी बैठक में हिस्सा लेते हैं।40 % उत्तरदाता परिवार के बड़े-बुजूर्गों से चर्चा- परिचर्चा करते हैं।8 % उत्तरदाता उपरोक्त सभी का प्रयोग करते हैं तथा सबसे कम 6 % उत्तरदाता नवीन संचार माध्यमों का प्रयोग करते हैं।

आप बैठक में किस प्रकार की चर्चा करते हैं?

बैठक में चर्चा	संख्या	प्रतिशत
पारिवारिक	02	07 %
सामाजिक	14	48 %
सामान्य	09	31 %
कुछ नहीं	04	14 %
कुल	29	100 %

सबसे अधिक 48 % सामाजिक विषय पर चर्चा करते हैं।31 % सामान्य, सबसे कम 7 % पारिवारिक विषय पर चर्चा करते हैं तथा 14 % कुछ नहीं कहना है। गुड़ी बैठक में 29 उत्तरदाता सम्मिलित होते हैं। उन्हीं के अनुसार चर्चा का विषय29 उत्तरदाता को 100 % माना गया है।

आप कौन- कौन सी भाषा बोली जानते हैं?

भाषा-बोली प्रकार	संख्या	प्रतिशत
छत्तीसगढ़ी	17	34 %
हिन्दी	09	18 %
अन्य	24	48 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 48 % उत्तरदाता अन्य बोली बोलते हैं तथा 34 % उत्तरदाता को छत्तीसगढ़ी एवं 18 % उत्तरदाता को हिन्दी की जानकारी है। अन्य बोली के रुप में वे अपने समुदाय में बोली जाने वाली बोली का प्रयोग करते हैं।

क्या आपको राजनीतिक पार्टियों की जानकारी है?

राजनीतिक पार्टियों की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
हां	23	46 %
नहीं	27	54 %

कुल	50	100 %

46 % उत्तरदाताओं को राजनीतिक पार्टियों की जानकारी है तथा उससे अधिक54 % उत्तरदाताओं को राजनीतिक पार्टियों की जानकारी नहीं है।

देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व राज्य के मुख्यमंत्री की जानकारी है?

जानकारी है	संख्या	प्रतिशत
हां	13	26 %
नहीं	33	66 %
कुछ-कुछ	04	08 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 66 % उत्तरदाताओं को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री की जानकारी नहीं है। केवल26 % उत्तरदाता को जानकारी है। 8 % उत्तरदाता को कुछ-कुछ जानकारी है।

आपके समुदाय में किसी खबर या जानकारी को अन्यत्र पहुंचाने के लिए किस प्रकार संचार करते हैं?

संचार का प्रयोग	संख्या	प्रतिशत
लिखित	02	04 %
मौखिक	48	96 %
सांकेतिक	00	0 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 96 % उत्तरदाता मौखिक संचार करते हैं। जबकि 4 % ही लिखित माध्यम से संचार करते हैं। सांकेतिक संचार का प्रयोगकोई भी उत्तरदाता नहीं करता है।

सूचना प्राप्त करने के लिए किन-किन संचार माध्यमों का प्रयोग करते हैं?

सूचना प्राप्त किया जाता है	संख्या	प्रतिशत
अखबार	00	0 %
टीवी	01	02 %
रेडियो	03	06 %
सरकारी तंत्र	38	76 %
उपरोक्त सभी	08	16 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक सूचना प्राप्त करने में 76 % सरकारी तंत्र का प्रयोग किया जा रहा है।16 % उत्तरदाता ने सभी प्रकारों के प्रयोग पर सहमति जताई है। 6 % रेडियो का प्रयोग तथा 0 % अखबार का प्रयोग उत्तरदाता सूचना प्राप्त करने में प्रयोग करते हैं। सूचना प्राप्त करने के लिए उत्तरदाताओं द्वारा अखबार का प्रयोग नहीं किया जाता है।

क्या आप किसी व्यक्ति से बातचीत करने के पूर्व कोई सोच बनाते हैं?

बातचीत करने के पूर्व सोच बनाना	संख्या	प्रतिशत
हां	32	64 %
नहीं	18	36 %
कुल	50	100 %

64 % उत्तरदाता किसी व्यक्ति से बातचीत करने के पूर्व कोई सोच बनाते हैं।36 % उत्तरदाता किसी भी प्रकार की सोच नहीं बनाते हैं

क्या आप किसी अनजान व्यक्ति से बातचीत करने में झिझकते या संकोच करते हैं?

बातचीत में संकोच-झिझक	संख्या	प्रतिशत
हां	42	84 %
नहीं	08	16 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 84 % उत्तरदाता अनजान व्यक्ति से बातचीत करने में संकोच करते हैं उनसे झिझकते हैं॥16 % उत्तरदाता का कहना है कि वो अनजान व्यक्ति से बातचीत करने में संकोच या झिझक का अनुभव नहीं करते हैं।

आप अन्य समुदाय के लोगों से बातचीत करने के दौरान किस बातों पर ज्यादा ध्यान देते हैं?

बातों पर ध्यान देना	संख्या	प्रतिशत
उनके हाव-भाव पर	20	40 %
उनकी बातों पर	11	22 %
उनकी सामाजिक स्थिति	10	20 %
उपरोक्त सभी	09	18 %
कुल	50	100 %

40 % उत्तरदाता अन्य समुदाय के लोगों से बातचीत करने के दौरान उनके हावभाव पर अधिक ध्यान देते हैं।22 % उत्तरदाता उनकी बातों पर ध्यान देते हैं।20 % उत्तरदाता उनकी सामाजिक स्थिति पर ध्यान देते हैं। सबसे कम18 % उत्तरदाता का कहना है कि वो उपरोक्त सभी बातों पर ध्यान देते हैं।

कला, संस्कृति, परंपरा, मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक किस प्रकार पहुंचा रहे हैं

हस्तांतरण का माध्यम	संख्या	प्रतिशत
लिखित माध्यम	0	0 %
मौखिक माध्यम	30	60 %
कहानी	01	02 %
गीत	06	12 %
सभी	13	26 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 60 % उत्तरदाता मौखिक रुप से अपनी कला, संस्कृति, परंपरा, मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक पहुंचा रही है। 26 % उत्तरदाता का कहना है कि वे सभी माध्यमों का प्रयोग करते हैं। 12 % उत्तरदाता गीत के माध्यम से हस्तांतरण कर रही है तथा 2 % उत्तरदाता कहानी के माध्यम से पीढ़ी को जानकारी दे रही है।0 % है लिखित माध्यम का प्रयोग, उत्तरदाता लिखित माध्यम का प्रयोग नहीं करते हैं।

क्या आपसी मेल-जोल के लिए पारंपरिक- सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं?

कार्यक्रम का आयोजन	संख्या	प्रतिशत
हां	39	78 %

नहीं	11	22 %
कुल	50	100 %

78 % उत्तरदाता का कहना है कि आपसी मेल- जोल के लिए पारंपरिक- सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।22 % उत्तरदाता का कहना है कि कार्यक्रम आयोजित नहीं किए जाते हैं।

क्या कुछ परंपराओं को केवल तीजत्यौहार के अवसर पर ही किया जाता है?

कुछ विशेष किया जाता है	संख्या	प्रतिशत
हां	42	84 %
नहीं	08	16 %
कुल	50	100 %

84 % उत्तरदाता का कहना है कि कुछ परंपराओं को केवल तीजत्यौहार के विशेष अवसर पर ही किए जाते हैं। जबकि16 % उत्तरदाता का मानना है कि ऐसा आयोजन नहीं किया जाता है।

क्या संस्कृति से संबंधित बातों को युवा पीढ़ी से छुपाई जाती है

बातें छुपाई जाती है	संख्या	प्रतिशत
हां	32	64 %
नहीं	18	36 %
कुल	50	100 %

64 % संस्कृति से संबंधित बातों को युवा पीढ़ी से छुपाई जाती है36 % उत्तरदाता के अनुसार संस्कृति से संबंधित बातों को युवा पीढ़ी से नहीं छुपाया जाता है।

आप गोदना व अन्य प्रतीक चिन्हों का क्या महत्व समझते हैं?

गोदना का महत्व	संख्या	प्रतिशत
धार्मिक	17	34 %
पारंपरिक	12	24 %
दोनों	14	28 %
कुछ नहीं	07	14 %
कुल	50	100 %

34 % उत्तरदाता गोदना व प्रतीक चिन्हों का धार्मिक महत्व मानते हैं।24 % उत्तरदाता पारंपरिक महत्व मानते हैं।28 % उत्तरदाता धार्मिक व पारंपरिक दोनों महत्व को मानते हैं।14 % गोदना व प्रतीक चिन्हों का कुछ भी महत्व नहीं मानते हैं।

क्या आप अपनी पुरानी मान्यताओं व बातों को मानने के लिए अपने बच्चों पर जोर डालते हैं

मानने के लिए जोर डालते हैं	संख्या	प्रतिशत
हां	27	54 %
नहीं	23	46 %
कुल	50	100 %

सबसे अधिक 54 % अपनी पुरानी मान्यताओं व बातों को मानने के लिए अपने बच्चों पर जोर डालते हैं। साथ ही46 % उत्तरदाताओं का कहना है कि इस प्रकार का जोर नहीं डाला जाता है।

आपके समुदाय के युवक-युवतियां अपने पारंपरिक रीतिरिवाजों और संचार व्यवस्था से दूर होते जा रहे हैं

रीति रिवाज से दूर हो रहे हैं	संख्या	प्रतिशत
हां	29	58 %
नहीं	21	42 %
कुल	50	100 %

58 % समुदाय की युवक-युवतियां अपने पारंपरिक रीति-रिवाज और संचार व्यवस्था से दूर होते जा रहे हैं।42 % उत्तरदाताओं के अनुसार समुदाय के युवक-युवतियां अपने पारंपरिक रीति रिवाज और संचार व्यवस्था से दूर नहीं हो रहे हैं।

क्या कारण है कि आप अपनी पुरानी मान्यताओं को मानते हैं

मान्यताओं को मानने का कारण	संख्या	प्रतिशत
अनहोनी का डर	28	56 %
धार्मिक	09	18 %
पारंपरिक	07	14 %
अन्य	06	12 %
कुल	50	100 %

56 % उत्तरदाता अनहोनी के डर से अपनी पुरानी मान्यताओं को मानते हैं।18 % धार्मिक कारण से मानते हैं। 14 % उत्तरदाता पारंपरिक कारण से तथा 12 % उत्तरदाता अन्य कारण से अपनी पुरानी मान्यताओं को मानते हैं।

निष्कर्ष (Conclusions) :

पहाड़ी कोरवा जनजाति आधुनिक संचार साधनों का प्रयोग कम करते हैं।

इस परिकल्पना की पुष्टि हेतु पूछे गए प्रश्नों के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि100 % पहाड़ी कोरवा जनजाति के पास टेलीविजन नहीं है। रेडियो केवल 26 % लोग ही सुनते हैं और74 % उत्तरदाता रेडियो नहीं सुनते। 96 % उत्तरदाता अखबार नहीं पढ़ते। 82 % उत्तरदाता के पास मोबाईल नहीं है, मात्र 18 % उत्तरदाता के पास मोबाईल है। कोई भी पहाड़ी कोरवा डाक या चिट्ठी- पत्री का प्रयोग नहीं करता है। मनोरंजन के लिए 82 % पारंपरिक माध्यमों का ही प्रयोग करते हैं। किसी जानकारी या संदेश को पहुंचाने के लिए96 % मौखक संचार का प्रयोग करते हैं। अतः इसके प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति संचार माध्यम के रूप में आज भी परंपरागत माध्यमों का ही प्रयोग कर रही है। जो कि इस परिकल्पना को सिद्ध करता है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति अपनी परंपरा, कला, संस्कृति, पर्व, मान्यताओं, लोकगीतों के हस्तांतरण में परंपरागत माध्यमों का प्रयोग करते हैं।

मनोरंजन के लिए 82 % प्रयोग पारंपरिक माध्यम का करते हैं, जिसमें कथा, गीत, शिक्षा, मान्यता, परंपरा निहित होता है। 60 % मौखिक माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचा रही है। लिखित माध्यम उनकी पारंपरिक व्यवस्था है। अतः इसके प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति अपनी परंपरा, कला, संस्कृति, पर्व, मान्यताओं, लोकगीतों के हस्तांतरण में परंपरागत माध्यमों का प्रयोग करते हैं, जो कि इस परिकल्पना को सिद्ध करता है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति के नई पीढ़ियों में रुचि की कमी के कारण अपनी पुरानी परंपराओं को सिखने में कमी आ रही है।

प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 58 % उत्तरदाता का कहना है कि सिखने की रुचि में कमी आ रही है तथा 42 % का कहना है कि रुचि में कमी नहीं आ रही है। किन्तु 58 % अधिक है। अतः इसके प्राप्त परिणामों से यह पता चलता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति के समुदाय के युवक-युवतियां अपने पारंपरिक रीतिरिवाजों और संचार व्यवस्ता से दूर होते जा रहे हैं।

पहाड़ी कोरवा जनजाति स्वयं को जागरुक बनाने के लिए सामाजिक गुड़ी-बैठक तथा समूह संचार के माध्यम से स्वयं को परिपक्व बनाती है।

पूछे गए प्रश्नों से प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 46 % गुड़ी बैठक में तथा 40 % बड़ों से चर्चा परिचर्चा करते हैं, नवीन संचार माध्यमों का प्रयोग केवल 6 % ही करते हैं। गुड़ी- बैठक में 48 % पहाड़ी कोरवा सामाजिक चर्चा करते हैं जबकि 31 % सामान्य चर्चा करते हैं। गुड़ी-बैठक में समूह संचार होता है जिससे की समूह संचार की अवधारणा स्पष्ट होती है। अतः इसके प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति स्वयं को जागरुक बनाने के लिए सामाजिक गुड़ी-बैठक तथा समूह संचार के माध्यम से स्वयं को परिपक्व बनाती है।

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के परिणामों के आधार पर उपरोक्त परिचर्चा की गई है, जिसके आधार पर प्रमुख शोध निष्कर्ष निम्नलिखित हैं- आज भी पहाड़ी कोरवा आदिम अवस्था में जीवन-यापन कर रहे हैं। दिनहीन अवस्था और शिक्षा की कमी के कारण आर्थिक रुप से भी काफी पिछड़े हैं। इनमें आधुनिक संचार माध्यम का प्रयोग तो नहीं के बराबर हो रहा है। इनके पास सड़क और बिजली की पहुंच अभी ठीक से हुई नहीं है। इनमें अभी भी संचार के पुराने माध्यम तथा मौखिक संचार ही मुख्य रुप प्रयोग की जारही है। आज भी ये पैदल जाकर स्वयं ही किसी बात को मौखिक रुप से संदेश प्रदान करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। अधितर पहाड़ी कोरवा गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं। इनमें शिक्षा का स्तर निम्न है और सबसे कठिनतो महिला शिक्षा है, जो कि पुरुष की तुलना में निम्न से निम्नस्तर पर है। पहाड़ी कोरवा जनजाति पहाड़ों पर अलग-थलग जीवन जी रहे हैं इनको अन्य समाज से कोई विशेष लगाव नहीं होता है। ये अलग जीवन जीना ही पसंद करते हैं। किन्तु इसका कटु सत्य भी सामने आ रहा है कि ये विकास के मामले में अन्य जनजाति या आधुनिक समाज से पीछे हैं, विकास इन तक पहुंच नहीं पा रहा है और ये स्वयं विकास के रास्ते पहुंच नहीं पा रहे हैं। इनको मुख्य धारा में जोड़ना एक बड़ी चुनौती है। अभी की नई पीढ़ी अन्य समुदाय के लोगों से मिलकर उनके तौर-तरीकों को सीख रहे हैं। जिससे कि शिक्षा, काम-काज को पहाड़ी कोरवा अपना रहे हैं। एक प्रकार से नए जीवन तरीके को आत्मसात कर रहे हैं। इसका ये लाभ हो रहा है कि वे कम से कम मजदूरी करने के लिए पहाड़ों-जंगलों से निकलकर बाहर आ रहे हैं। अपनी बोली के अलावा वे अन्य बोली जैसे छत्तीसगढ़ी और हिन्दी को भी सीख रहे हैं। संचार में ये इनके लिए बड़ी उपलब्धि है। साथ ही साथ पहाड़ी कोरवा की नई पीढ़ी भविष्य में कदम रख रही है तथा अध्ययन के दौरान पता चला कि अब नई पीढ़ी विकास के साथ चलने को तैयार हो रही है। शिक्षा का स्तर धीरे-धीरे सुधर रहा है, किन्तु लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इनको योजनाओं की जानकारी काफी कम है। ये बहुत सीधे-साधे लोग हैं। संचार के नवीन आधुनिक माध्यमों के प्रयोग से इनके समाज में, परिवार में, जीवन चर्या, शिक्षा, स्वास्थ, जागरुकता सभी क्षेत्रों में अभिवृद्धि होगी। कुछ परिवर्तन दिखने भी लगा है।

सुझाव (Recommendations) :

1. पहाड़ी कोरवा जनजाति की प्रमुख समस्या उनकी निम्न साक्षरता का होना है, शिक्षा के अभाव में व्यक्ति और समाज का विकास हो पाना मुश्किल है। शिक्षा से ही बेहतर देश और समाज का निर्माण होता है। इनकी निम्नशिक्षा का स्तर ही इनके विकास में बाधक है। शिक्षा के अभाव में ये अपने आप को ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। इनके लिए विशेष तरह की पाठशाला

खोलने की जरुरत है, जहां ऐसे शिक्षक नियुक्त किए जाएं जो कि जनजातीय संचार के बारे में प्रशिक्षित हो। तभी इन्हें अंधविश्वास, निषेध आदि से मुक्तकर मुख्यधारा में शामिल किया जा सकता है।

2. गांव में बिजली न होना भी एक बड़ी समस्या है। आज भी देश की आजादी को इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी पहाड़ी कोरवा के कई गांवों में बिजली नहीं पहुंच पई है। सबसे पहले इनके गांवों में बिजली कनेक्शन जोड़ा जाए। बिजली होगा तो इनके बच्चे रात में लिख-पढ़ पाएंगे। बिजली आ जाने से इनके जीवन में प्रकाश तो होगा ही साथ ही ये संचार माध्यम जैसे टीवी, रेडियो, मोबाईल आदि का प्रयोग कर पाएंगे।

3. कई गांवों में अभी तक सड़क नहीं पहुंच पाई है। सड़क के ना होने से ये विकास की धारा से जुड़ नहीं पारहे हैं। इसके कारण ही ये अलग-थलग जीवन जी रहे हैं तथा अन्य समाज से कटे-कटे से हैं। सड़कों से अगर इनके गांव जुड़ जाए तो ये रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के लिए इसका बेहतर प्रयोग कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं।

4. इनको सबसे पहले पहाड़ों से नीचे जमीन पर इंदिरा आवास, अटल आवास के तहत इन्हें मैदानी इलाकों में बसाया जाए।

5. पहाड़ी कोरवा जनजाति के संचार व्यवस्था को मजबूत बनाने की जरुरत है। ये आज भी परंपरागत माध्यम पर अधिक आश्रित हैं। आधुनिक संचार साधन और व्यवस्था को अपना कर भी ये जागरुक बन सकते हैं। किसी भी समाज के विकास में संचार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। गांवों में वायरलेस टावर, टेलीफोन की सुविधा, रेडियो, टेलीविजन सेट की सुविधा दी जाए। इनको पोस्ट ऑफिस और बैंक खाता, किसान क्रेडिट कार्ड से जोड़ा जाए। जिससे कि इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। अध्ययन से प्राप्त शोध परिणाम शोधार्थी द्वारा लिए गए उपकल्पनाओं की पुष्टि करता है अतः स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन पहाड़ी कोरवा जनजाति के विकास उनके संचार व्यवस्था तथा आने वाले समय में नए आधुनिक संचार माध्यम के प्रयोग एवं विकास के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इनके समुचित विकास, योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ ही साथ योजनाकारों, प्रशासकों एवं भावी अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची(Reference) :

1. आहूजा राम, सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008.
2. आहूजा राम, भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008.
3. अंकित डॉ. अनिल के. राय, संचार के सात सोपान, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2006.
4. एलविन डॉ. वेरियर, जनजातीय मिथक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
5. कोसंबी दामोदर धर्मानंद, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 2009.
6. गौतम सुशील, आदिवासीगढ़ छत्तीसगढ़, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार प्रकाशन, 2004, 2009.
7. तिवारी डॉ शिवकुमार, शर्मा डॉ श्रीकमल, मध्यप्रदेश की जनजातीय समाज एवं व्यवस्था, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1994, 2000.
8. तिवारी डॉ. विजय कुमार, छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2001.
9. दास गुप्तेश्वर, छत्तीसगढ़ के भुंजिया जनजाति में सामाजिक परिवर्तनः एक अध्ययन, 2005.
10. दयाल डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2010.
11. महाजन डॉ. संजीव, ग्रामीण समाजशास्त्र, अर्जुन पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2011.
12. प्रसाद डॉ. राजेन्द्र, साहित्य शिक्षा और संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2009.
13. भारद्वाज नंद, संस्कृति जनसंचार और बाजार, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.
14. विद्यालंकार सत्यकेतु, भारतीय संस्कृति का विकास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2006.
15. वर्मा डॉ. हरिशचन्द्र, शोध- प्रविधि, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2006, 2011.
16. शर्मा राधेश्याम, जनसंचार, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला, 2012.

17. राजगहिया विष्णु, जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
18. सिंह श्रीकांत, संप्रेषण प्रतिरुप एवं परिचय, भारती पब्लिकेशर्स, फैजाबाद.
19. सूर्यवंशी रवि, टेलीविजन धारावाहिकों का गृहणियों पर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव, लखनऊ केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 2014.
20. सिंह राजेन्द्र, विश्व की प्राचीन सभ्यताएं एवं संस्थाएं, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2007.
21. शर्मा डॉ. श्रीनाथ, जनजातीय समाजशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2007.
22. हसनैन, नदीमः जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2005.
23. Kothari C.K., Research Methodology, New Age International (P) Limited Publishers, 2004.
24. Kumar Keval J., Mass Communication in india, Jaico Publishing House, Mumbai, 2009.
25. McQuail, D., Mass Communication Theory: An Introduction, Sage Publications, London, 1987:2000.
26. Rizvi B.R., Hill Korwas of Chhattisgarh, Gian Publication House, New Delhi, 1989.
27. 2011_Census_Scheduled_Tribes_distribution_map_India_by_state_and_union_territory.svg
28. http://amitbhu6.blogspot.in/2014/11/blog-post_14.html
29. http://www.censusindia.gov.in/
30. http://tribal.cg.gov.in/sbt.htm
31. http://tribesindia.com/
32. http://www.ncai.org/news/tribal-communications-resources
33. http://tribal.nic.in/WriteReadData/userfiles/file/ScheduledTribesData/Section2.pdf
34. http://medind.nic.in/ibl/t07/i3/iblt07i3p178.pdf